P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# वंशज उपन्यास में सामाजिक चेतना : मृदुला –गर्ग

**सुप्रिया**
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
के. एम.जी.जी.पी.जी. कालेज,
बादलपुर, जी.बी. नगर

**सारांश**

भारतीय साहित्य में सामाजिक चेतना को व्यापक फलक पर पहुंचाने के लिए हिन्दी साहित्य का विशेष योगदान रहा हैं। आदिकाल से लेकर अब तक के समय में अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए। साहित्य के माध्यम से ही लेखक पाठक के मन को जागृत कर उसमें समाज के प्रति संघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान करता है। साहित्य के क्षेत्र में सामाजिक चेतना के उस रूप का उदय हुआ, जो उसने भोगा था,पर दूसरे उससे अनभिज्ञ थे। युगों के साथ–साथ सामाजिकता के तेवर भी बदले। मृदुला –गर्ग का उपन्यास आज की चुनौतियों का सामना करती है, इनके पात्र परंपरागत अंधविश्वास रूढ़ि राजनीतिक आर्थिक सामाजिक आदि प्रक्रियाओं के प्रति प्रश्नचिन्ह लगाते है। इनके कथानकों के केन्द्र में सामाजिक चेतना हैं। मृदुला–गर्ग ने अपने उपन्यासों में समकालीन समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया हैं। साहित्यकार का संबंध जितना सामाजिकता से होता है, उतना ही साहित्य से विशेष सामाजिक चेतना का विराट विश्व व्यापक फलक पर नाता जोडता हैं।

**मुख्य शब्द :** इस लेख का मुख्य शब्द चेतना है। वह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक या भौगोलिक चाहे जिस रूप में हो।

**प्रस्तावना**

साहित्य और साहित्यकारों ने सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, हम यहॉ हिन्दी भाषी समाज जरूर कहें, व्योंकि हम समग्र भारत की बात नही कर रहे हैं, उसमें आपको यह दिखाई देगा की सामाजिक परिवर्तनों की दिशा में जिस तरह की चीजें दिखायी देती रही हैं, उनके उपन्यास के कथानक में स्थान दिया है 'वंशज' उपन्यास में दर्शाया गया है कि वर्तमान पूंजीवादी समाज में शारीरिक परिश्रम करने वाले मजदूरों का भीषण होता हैं। ''जब तक औरत यह समझती रहेगी कि मर्द ही असल कमाऊ होता है, उसकी कमाई को अनदेखा किया जाता रहेगा'' [1]।

उपन्यास का मैनेजर भादुड़ी जब गरीब मजदूरों का शोषण करता है तो सुधीर इसके विरोध में आवाज उठाता है फलतः मजदूरों के हितचिंतक इंजीनियर सुधीर को ही नौकरी से निकाल दिया जाता है। आज सिफारिश और भ्रष्टाचार का जमाना है, जिसकी सिफारिश करने वाले लोग है। वह दुर्लभ नौकरी भी प्राप्त कर सकता है, अतः स्त्री को इस पितृसत्तात्मक समाज में सीमित किया जाता है, उनको घर में रहने को कहा जाता है। उनकी यौनिकता उनकी शारीरिक सीमाएं, उनकी सामाजिक सीमाएं उनके ऊपर थोपे गए मूल्य पुरूषवादी वर्चस्व, वो सारी बात है जिन्हे वो एक अलग तरीके से देख रही हैं।

'सुधीर और सविता शयन कक्ष में एकांत में मिलते रहे पति–पत्नी का व्यापार निभाते रहे। आश्चर्य, केवल कर्तव्य समझकर नहीं,प्रकृति के नियमों से अभिभूत होकर भी शरीर की अपनी मांगे होती है और अपने ही नियम ... दिन में अपने – अपने क्षेत्र में एक दूसरे से जूझते और सूरज छिपने पर हथियार डालकर रातभर के लिए संधि कर लेते''।[2]

हिन्दी उपन्यास लेखन में महिलाओं की चर्चा करें तो इस लोकतंत्र के सम्पूर्ण वैभव का दारोमदार उस पक्ष पर निर्भर करता है, जो सदियों से उपेक्षित रहा है और अब भी उसकी मुक्ति के लिए सिर्फ बुद्धिजीवी वर्ग सक्रिय है। सदियों अप्रत्यक्ष मूक संघर्ष के पश्चात स्त्री ने जिस प्रकार क्रमशः अपने व्यक्तित्व को खोजा और संवारा है । जो नारी चेतना और सशक्तिकरण को नया आयाम देती है। इनके सम्पूर्ण उपन्यासों में नारी चेतना को व्यापक सामाजिक परिवेश में उभारा गया हैं।

'वंशज' उपन्यास में शुक्ला साहब अग्रेजों की अनुशासनप्रियता और संस्कारों से प्रभावित होने के कारण अंग्रेजी का अधिक मात्राा में प्रयोग करते हैं– जैसे 'गेट ऑउट ऑल ऑफ यू'' [3]

पहले चरण की विचाराधारा का मानना था कि स्त्री और पुरूष के स्वभाव में मूलभूत अन्तर नहीं है। सारा मसला ऐतिहासिक प्रभुत्व और संस्कार का है। पूरी दुनिया में स्त्रीवाद पहले पहल पितृसत्ता के विरूद्ध आंदोलन के रूप में शुरू हुआ था जिसका मुख्य मुद्दा स्त्री को वो अधिकार दिलवाना था, जो पुरूष को प्राप्त थे , पर स्त्री को नहीं।

'वह पुरूष के प्रत्येक षडयंत्र से परिचित है तदनुरूप वह प्रत्येक स्थिति में सजग–सचेष्ट है, वह अजस्त्र शक्ति–स्त्रोंत से सुपरिचित होकर यह समझ सकी है कि तन से अधिक उसका मन और अंतर्मन प्रबल है। वह शिक्षा, राजनीतिक, प्रशासन, चिकित्सा और नानाविध क्षेत्रों मे पीछे छोड़ती रही हैं।'' स्त्रियां उपयुक्त वातावरण में सॉस लेना सीख लिया है। वह जीवन के अन्वेषण क्रम में परिपक्व होकर अपना रास्ता स्वतः निर्मित कर रही हैं। इतने वर्षों में काफी खुद बदला है, लेकिन विवाह के बाहर के सम्बन्ध आज भी गलत नजरिए से देखे जाते हैं।पूरा समाज 'जज' बन जाता है और सम्बन्ध में जाने वाला इंसान मुजरिम बन जाता है। '' भगवान व्यक्ति का जन्म और मृत्यु निर्धारित करता है, उसकी इच्छा – शक्ति नही,'बाइबिल में लिखा है, 'दाऊ मेएस्ट' –तुम कर सकते हो, चाहो तो'' [5] पारम्परिक मूल्यों में आने वाले परिवर्तनों का सबसे पहले प्रभाव स्त्री –पुरूष संबधों पर परिलक्षित होता है,। दाम्पत्य–जीवन संबंधी पारम्परिक मान्यताओं को तब ठेस पहुंची, जब नैतिकता संबंधी समस्या चली आयी।

स्त्री पर पुरूष द्वारा होने वाला आर्थिक, शारीरिक और बौद्धिक शोषण और उसी के फलस्वरूप स्त्री की प्रतिकिया आत्मनिर्भरता तथा पुरूष सत्ता के बराबर पहुंचने की होड़ ही उपन्यास का कथ्य है। '' समाज द्वारा स्थापित नैतिक मूल्यों के भय से इच्छाओं विचारों के दमन से ही प्रेम अशरीरी नही बना जाता, केवल कुंठा का रूप धारण कर लेता है जो उसे हर समय भयभीत बनाएं रखती है''[6]

समाज में व्याप्त विचारों का साहित्य में भी नारी के प्रति व्यापक रूप से चिंतन प्राप्त होता है। आधुनिक काल में लिखी गयी प्रत्येक विधा में चाहे वह नाटक हो, कहानी कविता निबंध उपन्यास सभी में नारी की समस्या ,संघर्ष शोषण, स्थिति तथा मुक्ति को स्वर प्रदान किया गया है। हिन्दी साहित्य में नारी को केन्द्र में रखकर अनेक उपन्यास स्त्री और पुरूष लेंखको द्वारा लिखे गये है। नारी चेतना के सन्दर्भ में मृदुला–गर्ग स्त्री स्वतंत्रता की पक्षधर रही हैं। उन्होंने स्त्री को उपभोग और प्रयोग की वस्तु नही माना और ना ही स्त्री शोषण करने की चीज है। उनकी दृष्टि में स्त्री एक मनुष्य हैं, उन्होंने जिस नारी का चित्रण अपने साहित्य में किया है वह घर परिवार की देहलीज लाघॅकर बाहर आने वाली स्वतंत्र चिंतन और निर्णय क्षमता से संपन्न नारी हैं। साहित्य समाज का दर्पण है और इतिहास का पूरक पृष्ठ भी,जहॉ इतिहास की किरणें नहीं पहुचपाती वहॉ साहित्य ही युगीन साक्ष्य को समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। इसी तरह साहित्य केवल समाज का दर्पण बनकर ही नही रह जाता, प्रदीप स्तम्भ बनकर तमाच्छादित जन को आशा का आलोक प्रदान करता है। वह दर्पण न होकर उस पर पड़ने वाला चोट भी है। मैक्सिम गोर्की लिखते है ''मानव –चेतना का विकास तथा मानव सहानुभूति के विस्तार को साहित्य का सर्वोपरि गुण माना है'' 7

यह समाज की प्रेरणा बनकर भी मार्ग– दर्शन करता है। इस तरह इसका उत्तरदायित्व उल्लेखनीय ही नहीं महत्वपूर्ण भी है।''हिन्दी उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों में भारतीय समाज का विशद् अंकन करते हुए। संयुक्त परिवार घर खेत समाज के अत्यन्त स्पष्ट एवं सुन्दर चित्र प्रस्तुत किये है''[8]

समाजिक चेतना की उजागरता से ही स्त्री–पुरूष परस्पर की भावनाओं संवेदनाओं को स्वीकार कर पायेंगे, सम्मान कर पायेगें और एक स्वस्थ समाज और राष्ट्र का निर्माण कर सकेगें।

नारी को अपनी अस्मिता अपनी चेतना को उजागर करने का प्रयत्न मृदुला जी ने अपने साहित्य में किया है। '' अब तक औरत के बारे में पुरूष ने जो कुछ लिखा उस पर शक किया जाना चाहिए, क्योंकि लिखने वाला न्यायाधीश और अपराधी दोनों है''9

नारी को मनुष्य के रूप में देखते हुए उसकी समकालीन चेतना को झकझोर कर नारी की एक नयी छवि को प्रस्तुत करना चाहती है। इसका निर्माण उसके संस्कारों के आधार पर नही उसकी प्रकृति और स्वभाव के आधार पर करना चाहती हैं।

**अध्ययन का उद्देश्य**

साहित्य समाज का दर्पण कहा जाता है। जिससे समाज को प्रेरणा और मार्गदर्शन के साथ–साथ सूचना तथा मनोरंजन प्राप्त होता है। वंशज उपन्यास के माध्यम से मृदुला गर्ग ने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को बड़े सुंदर शब्दों से पिरोया है। उपन्यास में समानता पर बल दिया गया है जिसमें पूंजीपति मजदूरों को और पुरूष स्त्री को समान महत्व दें सकें। स्त्री भी अपनी अहमियत को समझ सके। ''जब तक औरत यह समझाती रहेगी कि मर्द ही असल कमाऊ होता है, उसकी कमाई को अनदेखा किया जाता रहेगा।'' मजदूरों को भी समाज में सम्मान के साथ जीवन जीने का हक मिल सके। यही इस लेख का मुख्य उद्देश्य है।

**निष्कर्ष**

मृदुला–गर्ग का उपन्यास समाज की वास्तविकता को दर्शाती है। निः संदेह मृदुला –गर्ग आधुनिक जीवन के नए यथार्थ को अग्रणी करती हैं। इन्होने स्त्री के संघर्ष के जरिए समाज में ऐसा संघर्ष व्याप्त किया, जो प्राचीन रूढ़ियों व प्राचीन आदर्शों को एक नया रूप प्रदान करता है। इन्होंने अपने समय और समाज की कुरूपताओं और समस्याओं को विश्लेषित ओर व्यवस्थित करने का प्रयास किया । इनके कथानकों के केन्द्र में सामाजिक चेतना हैं। इनकी नायिकाएं परम्परागत रूप से स्थापित नारी की छवि को तोड़ती हैं और उनसे मुक्त होती हैं। इनका उपन्यास सामाजिक पारिवारिक विसंगतियों व्यवस्था के भ्रष्टाचार का प्रामाणिक आलेख है। मृदुला जी ने अपने साहित्य में नारी समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए नारी में आने वाली परिवर्तनकारी स्थितियों का पूर्ण रूप से विवेचन किया है।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

1. *मृदुला –गर्ग, 'कठगुलाब' उपन्यास पृष्ठ सं0 141*
2. *मृदुला –गर्ग' वंशज' उपन्यास पृष्ठ सं0–118–119*
3. *वही पृष्ठ सं0 –73*
4. *हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि –स्त्री विमर्श, पृष्ठ सं0 –140*
5. *मृदुला–गर्ग, चितकोबरा, उपन्यास, पृष्ठ सं0 91, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2017,*
6. *इलिमेंट्स, ऑफ सोशियोलॉजी –एम0 जिंसबर्ग, पृष्ठ सं0 9,*
7. *साहित्य और जीवन, मैक्सिम गोर्कि पृष्ठ सं0 91*
8. *हिन्दू लॉ–एस0एस0 एस0 सरकार, पृष्ठ सं0 243,*
9. *डॉ रोहिणी अग्रवाल, साहित्य का स्त्री –स्वर, पृष्ठ सं0 –9*